

अजीव और पुद्गल एक अध्ययन – छहढाला ग्रन्थ के परिप्रेक्ष्य में

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

संयुक्त मंत्री

अ.भा.दि. जैन शास्त्रपरिषद्

aasheishjain@gmail.com

93290-92390

- **प्रस्तावना** – तत्व सात है। इन सात तत्वों के माध्यम से संसार और सिद्ध इन अवस्थाओं को समझना सरल है। जो जीवन है वह जीव सहित है। जीव के बिना जीवन नहीं है। इस जीवन में जीव अजीव के बिना नहीं है। अजीव का संसर्ग रहेगा तो यह जीव संसार में रह सकेगा। बिना अजीव के जीव संसार में नहीं रह सकता है। अजीव तभी होगा जो उसके रहने योग्य वातावरण होगा। अजीव का जीव के साथ संसर्ग कर्मों की सत्ता से होगा। कर्म आठ हैं। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय। इन सभी कर्मों का अपना-अपना स्वभाव, अनुभाग, स्थिति और फल देने का शक्ति पृथक्-पृथक् है। संसारी हैं तो कर्म हैं और कर्म हैं तो उनका आना, बंधना, रूकना, क्षय होना – यह प्रक्रिया है। कर्म शुभ रूप भी आयेंगे और अशुभ रूप भी। यदि शुभ का विभाजन नहीं होगा तो कल्याण नहीं होगा और अशुभ नहीं होगा तो संसार वर्धन नहीं होगा। इसलिए तत्व सात कहे हैं – जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष। मुख्यता तत्व दो ही है – जीव और अजीव। अजीव के ही आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष भेद हैं। जीव अमूर्तिक है और अजीव मूर्तिक भी और अमूर्तिक भी, दोनों है। द्रव्य दो हैं – जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। अजीव द्रव्य के पाँच भेद हैं – पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। इन पाँच भेदों में प्रायःकर अजीव को पुद्गल कह दिया जाता है और पुद्गल को अजीव। हालांकि ऐसा कहने व्यवधान तो नहीं है परंतु दोनों की स्थिति में भिन्नता है क्योंकि केवल पुद्गल ही अजीव है, ऐसा नहीं है। जो अजीव है वह पुद्गल है ऐसा भी नहीं है। अजीव मूर्तिक और अमूर्तिक दोनों है परंतु पुद्गल केवल मूर्तिक है। जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण पाया जाता है वह मूर्तिक होता है। इसके विपरीत अमूर्तिक है। जीव द्रव्य अमूर्तिक है, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य अमूर्तिक हैं और ये पाँचों द्रव्य अजीव है। ये पाँच द्रव्य पुद्गल नहीं है। इस लेख में हम अजीव के स्वरूप को और पुद्गल के स्वरूप को समझेंगे और दोनों के अंतर को जानकर सात तत्वों का चिंतन करेंगे।

❖ **अजीव तत्व का परिचय** – जीव और अजीव दो तत्व हैं। जीव और अजीव दो द्रव्य हैं। अजीव द्रव्य के पाँच भेद हैं – धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल और काल। इन पाँचों को अजीव अस्तिकाय कहा है। इसके लिए आचार्यश्री कुंदकुंद स्वामी ने पंचास्तिकाय ग्रन्थ का भी लेखन किया है। यहाँ अभिहित अजीव के स्वरूप को समझते हैं।

➤ **अजीव तत्व की परिभाषा –**

तद्विपर्ययलक्षणोऽजीवः।¹

जीव से विपरीत लक्षणवाला अजीव है।

तेषां धर्मादीनाम् 'अजीव' इति सामान्यसंज्ञा जीवलक्षणाभावमुखेन प्रवृत्ता।²

धर्मादिक द्रव्यों में जीव का लक्षण नहीं पाया जाता है इसलिए उनकी अजीव यह सामान्य संज्ञा है।

यत्र पुनरुपयोगसहचरिताया यथोदितलक्षणायाश्चेतनाया अभावाद् बहिरंतश्चा चेतनत्वमवतीर्णं प्रतिभाति सोऽजीव।³

जिसमें उपयोग के साथ रहनेवाली, यथोक्त लक्षणवाली चेतना का अभाव होने से बाहर तथा भीतर अचेतनत्व अवतरित प्रतिभासित होता है, वह अजीव है।

इत्युक्तलक्षणोपयोगश्चेतना च यत्र नास्ति स भवत्यजीव इति विज्ञेयम्।⁴

इस प्रकार की उक्त लक्षणवाली चेतना जहाँ नहीं है वह अजीव होता है ऐसा जानना चाहिए।

➤ **अजीव के भेद – अजीव के दो आध्यात्मिक भेद कहे हैं-**

तच्च द्विविधम्। जीवसंबन्धमजीवसंबन्धं च।⁵

¹ सर्वार्थसिद्धि अध्याय/1/4/14

² सर्वार्थसिद्धि अध्याय/5/2/266

³ प्रवचनसार/ तत्त्वप्रदीपिका/ गाथा 127

⁴ द्रव्यसंग्रह/ मूल या टीका गाथा 15/50

⁵ परमात्मप्रकाश/ मूल या टीका अधिकार 1/30/33

अजीव दो प्रकार का है - जीव संबंध और अजीव संबंध।

देहरागादिरूपं जीवसंबंधं, पुद्गलादिपंचद्रव्यरूपमजीवसंबंधमजीवलक्षणम्।⁶

देहादि में राग रूप तो जीव संबंध अजीव का लक्षण है और पुद्गलादि पंचद्रव्य रूप अजीव संबंध अजीव का लक्षण है।

3. पाँच अजीव द्रव्यों का नाम निर्देश

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः 1।

कालश्च।⁷ 39।⁷

धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश द्रव्य पुद्गल द्रव्य और काल द्रव्य ये पाँच अजीवकाय हैं।

- ❖ पुद्गल द्रव्य का स्वरूप - जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाया जाता है वह पुद्गल है। पुद्गल मूर्तिक है। इसके पाँच भेद हैं— पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। इनमें धर्म, अधर्म, आकाश और काल अमूर्तिक तथा पुद्गल मूर्तिक है।

जो एक दूसरे के साथ मिलकर बिछुड़ता रहे, ऐसा पूरण-गलन स्वभावी मूर्तिक जड़ पदार्थ 'पुद्गल' ऐसी अन्वर्थ संज्ञा को प्राप्त होता है। तहाँ भी मूलभूत पुद्गल पदार्थ तो अविभागी परमाणु ही है। उनके परस्पर बंध से ही जगत् के चित्र विचित्र पदार्थों का निर्माण होता है जो स्कंध कहलाते हैं। स्पर्श, रस, गंध, वर्ण ये पुद्गल के प्रसिद्ध गुण हैं।⁸

1. पुद्गल सामान्य का लक्षण

1. निरुक्तयर्थ

राजवार्त्तिका/5/1/24,26/434/12 पूरणगलनान्वर्थसंज्ञत्वात् पुद्गलाः। 24। भेदसंघाताभ्यां च पूर्यते गलन्ते चेति पूरणगलनात्मिकां क्रियामन्तर्भाव्य पुद्गलशब्दोऽन्वर्थः....पुद्गलानाद्वा। 26। अथवा पुमांसो जीवाः, तैः शरीराहार-विषयकरणोपकरणादिभावेन गिल्यन्त इति पुद्गलाः। = भेद और संघात से पूरण और गलन को प्राप्त हों वे पुद्गल हैं यह पुद्गल द्रव्य की अन्वर्थ संज्ञा है। 24। अथवा पुरुष यानी जीव जिनको शरीर, आहार विषय और इंद्रिय-उपकरण आदि के रूप में निगलें अर्थात् ग्रहण करें वे पुद्गल हैं। 26।

⁶ परमात्मप्रकाश/ मूल या टीका अधिकार 1/30/33

⁷ तत्त्वार्थसूत्र अध्याय 5/1,39, (प्रवचनसार/ तत्त्वप्रदीपिका/ गाथा 127) (द्रव्यसंग्रह/ मूल या टीका गाथा 15/50)।

⁸ जैनेन्द्रसिद्धान्तकोष

नियमसार/ तात्पर्यवृत्ति/9गलनपूरणस्वभावसनाथः पुद्गलः ।= जो गलन-पूरण स्वभाव सहित है, वह पुद्गल है। (**द्रव्यसंग्रह टीका/15/50/12**); (**द्रव्यसंग्रह टीका/26/74/1**)।

2. गुणों की अपेक्षा

तत्त्वार्थसूत्र/5/23स्पर्शरसगंधवर्णवंतः पुद्गलाः । 23 ।= स्पर्श, रस, गंध और वर्ण वाले पुद्गल होते हैं।

2. पुद्गल के भेद

1. अणु व स्कंध

तत्त्वार्थसूत्र/5/25अणवः स्कंधाश्च । 25 ।= पुद्गल के दो भेद हैं - अणु और स्कंध।

2. स्वभाव व विभाव

नियमसार/ तात्पर्यवृत्ति/20पुद्गलद्रव्यं तावद् विकल्पद्वयसनाथम् । स्वभाव-पुद्गलो विभावपुद्गलश्चेति ।= पुद्गल द्रव्य के दो भेद हैं - स्वभाव-पुद्गल और विभाव पुद्गल।

3. देश प्रदेशादि चार भेद - देखें स्कंध - 1.2।

3. स्वभाव विभाव पुद्गल के लक्षण

नियमसार/ तात्पर्यवृत्ति/तत्र स्वभावपुद्गलः परमाणुः विभावपुद्गलः स्कंधः ।= उनमें, परमाणु वह स्वभावपुद्गल है और स्कंध वह विभाव पुद्गल है।

4. पुद्गल के 21 सामान्य विशेष स्वभाव

आलापपद्धति/4स्वभावाः कथ्यन्ते । अस्ति स्वभावः नास्तिस्वभावः नित्यस्वभावः अनित्यस्वभावः एकस्वभावः अनेकस्वभावः भेदस्वभावः अभेदस्वभावः भव्यस्वभावः अभव्यस्वभावः परमस्वभावः द्रव्याणामेकादशसामान्य-स्वभावाः । चेतनस्वभावः, अचेतनस्वभावः मूर्तस्वभावः अमूर्तस्वभावः एकप्रदेशस्वभावः अनेकप्रदेशस्वभावः विभावस्वभावः शुद्धस्वभावः अशुद्धस्वभावः उपचरितस्वभावः एते द्रव्याणां दश विशेषस्वभावाः । जीवपुद्गलयोरेकविंशतिः ।= स्वभावों को कहते हैं।

1. अस्तिस्वभाव,

2. नास्तिस्वभाव,

3. नित्यस्वभाव,

4. अनित्यस्वभाव,

5. एकस्वभाव,

6. अनेकस्वभाव,

7. भेदस्वभाव,

8. अभेदस्वभाव,

9. भव्य-स्वभाव,

10. अभव्यस्वभाव, और

11. परमस्वभाव, ये द्रव्यों के 11 सामान्य स्वभाव हैं।

12. चेतनस्वभाव,

13. अचेतनस्वभाव,

14. मूर्तस्वभाव,
 15. अमूर्तस्वभाव,
 16. एकप्रदेशस्वभाव,
 17. अनेकप्रदेशस्वभाव,
 18. विभावस्वभाव,
 19. शुद्धस्वभाव,
 20. अशुद्धस्वभाव, और
 21. उपचरितस्वभाव। (तथा
 22. अनुपचरितस्वभाव,
 23. एकांतस्वभाव, और
 24. अनेकांत स्वभाव (नयचक्र बृहद्/70 की टीका) ये द्रव्यों के विशेष स्वभाव हैं। उपरोक्त कुल 24 स्वभावों में से अमूर्त, चैतन्य व अभव्य स्वभाव से रहित पुद्गल के 21 सामान्य विशेष स्वभाव हैं (नयचक्र बृहद्/70)।
5. पुद्गल द्रव्य के विशेष गुण
 तत्त्वार्थसूत्र/5/23स्पर्शरसगंधवर्णवंतः पुद्गलाः। 23।= पुद्गल स्पर्श, रस, गंध और वर्णवाले होते हैं। (नयचक्र बृहद्/13); (धवला 15/33/6); (प्रवचनसार/ तत्त्वप्रदीपिका/132)।
 नयचक्र बृहद्/14वर्णरस पंच गंधा दो फासा अट्टुणायव्वा। 14।= पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गंध और आठ स्पर्श ये पुद्गल के विशेष गुण हैं।
 आलापपद्धति/2पुद्गलस्य स्पर्शरसगंधवर्णाः मूर्तत्वमचेतनत्वमिति षट्।= पुद्गल द्रव्य के स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, मूर्तत्व और अचेतनत्व, ये छह विशेष गुण हैं।
 प्रवचनसार/ तत्त्वप्रदीपिका/129, 136भाववंतौ क्रियावंतौ च पुद्गलजीवौ परिणामाद्भेदसंघाताभ्यां चौत्पद्यमानावतिष्ठमानभज्य-मानत्वात्। 129। पुद्गलस्य बंधहेतुभूतस्निग्धरुक्षगुणधर्मत्वाच्च। 136।= पुद्गल तथा जीव भाववाले तथा क्रियावाले हैं। क्योंकि परिणाम द्वारा तथा संघात और भेद के द्वारा वे उत्पन्न होते हैं, टिकते हैं और नष्ट होते हैं। 129। (पंचास्तिकाय/ तात्पर्यवृत्ति/27/57/9); (पंचाध्यायी/ उत्तरार्धा/25)। बंध के हेतुभूत स्निग्ध व रुक्षगुण पुद्गल का धर्म हैं। 136।
6. पुद्गल के प्रदेश
 नियमसार/35संखेज्जासंखेज्जाणंतप्रदेशा हवंति मुत्तस्स। 35।= पुद्गलों के संख्यात, असंख्यात और अनंत प्रदेश हैं। 10। (तत्त्वार्थसूत्र/5/10); (परमात्मप्रकाश/ मूल/2/24); (द्रव्यसंग्रह/25)।
 प्रवचनसार/ तत्त्वप्रदीपिका/135द्रव्येण प्रदेशमात्रत्वादप्रदेशत्वेऽपि द्विप्रदेशादिसंख्येयासंख्येयानंतप्रदेशपर्यायेणानवधारित- प्रदेशत्वात्पुद्गलस्य।= पुद्गल द्रव्य यद्यपि द्रव्य अपेक्षा से प्रदेशमात्र होने से अप्रदेशी है। तथापि दो प्रदेशों से लेकर संख्यात, असंख्यात और अनंत प्रदेशोंवाली पर्यायों की अपेक्षा से अनिश्चित प्रदेशवाला होने से प्रदेशवान् है। (गोम्मटसार जीवकांड/585/1025)।

7. शब्दादि पुद्गल द्रव्य की पर्याय हैं

तत्त्वार्थसूत्र/5/24 शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च। 24। = तथा वे पुद्गल शब्द, बन्ध, सूक्ष्मत्व, स्थूलत्व, संस्थान, भेद, अंधकार, छाया, आतप और उद्योतवाले होते हैं। 24।

अर्थात् ये पुद्गल द्रव्य की पर्याय हैं। (द्रव्यसंग्रह/16)।

राजवार्तिक/5/24/24/490/24 स्पर्शादयः परमाणूनां स्कंधानां च भवन्ति शब्दादयस्तु स्कंधानामेव व्यक्तिरूपेण भवन्ति। ...सौक्ष्म्यं तु अंत्यमणुष्वेव आपेक्षिकं स्कंधेषु। = स्पर्शादि परमाणुओं के भी होते हैं स्कंधों के भी पर शब्दादि व्यक्त रूप से स्कंधों के ही होते हैं। ...सौक्ष्म्य पर्याय तो अणु में ही होती है, स्कंधों में तो सौक्ष्म्यपना आपेक्षिक है। (और भी देखें स्कंध - 1.7)।

8. शरीरादि पुद्गल के उपकार हैं

तत्त्वार्थसूत्र/5/19-20 शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलनाम्। 19। सुख-दुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च। 20। सर्वार्थसिद्धि/5/20/289/2 एतानि सुखादीनि जीवस्य पुद्गलकृत उपकारः, मूर्तिमद्धेतुसंनिधाने सति तदुत्पत्तेः। = शरीर, वचन, मन और प्राणापन यह पुद्गलों का उपकार है। 19। सुख, दुःख, जीवन और मरण ये भी पुद्गलों के उपकार हैं। 20। ये सुखादि जीव के पुद्गलकृत उपकार हैं, क्योंकि मूर्त कारणों के रहने पर ही इनकी उत्पत्ति होती है।

9. पुद्गल में अनंत शक्ति है

पंचाध्यायी/ उत्तरार्ध/925 नैवं यवोऽनभिज्ञोऽसि पुद्गलाचिंत्यशक्तिषु। प्रतिकर्म प्रकृता यैर्नानारूपासु वस्तुतः। 925। = इस प्रकार कथन ठीक नहीं है क्योंकि वास्तव में प्रत्येक कर्म की प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभाग के द्वारा अनेक रूप पुद्गलों की अचिंत्य शक्तियों के विषय में तुम अनभिज्ञ हो। 925।

10. पृथिवी जल आदि सभी में सर्वगुणों की सिद्धि

प्रवचनसार/132 वण्णरसगंधफासा विज्जन्ते पुग्गलस्स सुहुमादो। पुढवीपरियत्तस्स य सद्दो सो पोगगलो चित्तो। 132। = वर्ण, रस, गंध और स्पर्श (गुण) सूक्ष्म से लेकर पृथ्वी पर्यंत के (सर्व) पुद्गल के होते हैं, जो विविध प्रकार का शब्द है वह पुद्गल अर्थात् पौद्गलिक पर्याय है। 132। राजवार्तिक/5/25/16/493/9 पृथिवी तावत् घटादिलक्षणा स्पर्शादि-शब्दाद्यात्मिका सिद्धा। अंभोऽपि तद्विकारत्वात् तदात्मकम्, साक्षात् गंधोपलब्धेश्च। तत्संयोगिनां पार्थिवद्रव्याणां गंधः तद्गुण इवोपलभ्यत इति चेत् नः साध्यत्वात्। तद्वियोगकालादर्शनात् तदविनाभावाच्च तद्गुण एवेति निश्चयः कर्तव्यः-गंधव-दंभः रसवत्त्वात् आम्रफलवत्। तथा तेजोऽपि स्पर्शादिशब्दादि-स्वभावकं तद्वत्कार्यत्वात् घटवत्। स्पर्शादिमतां हि काष्ठादीनां काय तेजः। किंच तत्परिणामात्। उपयुक्तस्य हि आहारस्य स्पर्शादिगुणस्य वातपित्तश्लेष्मविपरिणामः। पित्तं च जठराग्निः, तस्मात् स्पर्शादिमत्तेजः। तथा स्पर्शादिशब्दादिपरिणामो वायुः स्पर्शवत्त्वात् घटादिवत्। किंच, तत्परिणामात्। उपयुक्तस्य हि आहारस्य स्पर्शादिगुणस्य वातपित्तश्लेष्मविपरिणामः। वातश्च प्राणादिः, ततो वायुरपि स्पर्शादिमान् इत्यवसेयः। एतेन 'चतुस्त्रिद्वयेकगुणाः पृथिव्यादयः पार्थिवादिजातिभिन्नाः' इति दर्शनं प्रत्युक्तम्। = घट, पट आदि स्पर्शादिमान् पदार्थ पृथिवी हैं। जल भी पुद्गल का विकार होने से पुद्गलात्मक है। उनमें गंध भी पायी जाती है। 'जल में संयुक्त पार्थिव द्रव्यों की गंध आती है, जल स्वयं निर्गंध है' यह पक्ष असिद्ध है। क्योंकि

कभी भी गंध रहित जल उपलब्ध नहीं होता और न पार्थिव द्रव्यों के संयोग से रहित ही। गंध स्पर्श का अविनाभावी है। अर्थात् पुद्गल का अविनाभावी है। अतः वह जल का गुण है। जल गंधवाला है, क्योंकि वह रसवाला है जैसे कि आम। अग्नि भी स्पर्शादि और शब्दादि स्वभाववाली है क्योंकि वह पृथिवीत्ववाली पृथ्वी का कार्य है जैसे कि घड़ा। स्पर्शादिवाली लकड़ी से अग्नि उत्पन्न होती है यह सर्व विदित है। पुद्गल परिणाम होने से खाये गये स्पर्शादिगुणवाले आहार का वात पित्त और कफरूप से परिणाम होता है। पित्त अर्थात् जठराग्नि। अतः तेज को स्पर्श आदि गुणवाला ही मानना ठीक है। इसी तरह वायु भी स्पर्शादि और शब्दादि पर्यायवाली है, क्योंकि उसमें स्पर्श गुण पाया जाता है जैसे कि घट में। खाये हुए अन्न का वात पित्त श्लेष्म रूप से परिणाम होता है। वात अर्थात् वायु। अतः वायु को भी स्पर्शादिमान मानना चाहिए। इस प्रकार नैयायिकों का यह मत खंडित हो जाता है कि पृथ्वी में चार गुण, जल में गंध रहित तीन गुण, अग्नि में गंध रस रहित दो गुण, तथा वायु में केवल स्पर्श गुण है। (राजवार्तिका/2/20/4/133/17); (राजवार्तिका/5/3/3/442/6); (राजवार्तिका/5/23/3/484/20)।

प्रवचनसार/तत्त्वप्रदीपिका/132सर्वपुद्गलानां

स्पर्शादिचतुष्कोपेतत्वाभ्युपगमात्।

व्यक्तस्पर्शादिचतुष्कानां

च

चंद्रकांतारणियवाना-मारंभकैरेव

पुद्गलैरव्यक्तगन्धाव्यक्तगंधरसाव्यक्तगंधरसवर्णानामब्ज्योतिरुदरमरुत-मारंभदर्शनात्।= सभी

पुद्गल स्पर्शादि चतुष्क युक्त स्वीकार किये गये हैं क्योंकि जिनके स्पर्शादि चतुष्क व्यक्त हैं ऐसे चंद्रकांत मणि को, अरणिको और जौ को पुद्गल उत्पन्न करते हैं; उन्हीं के द्वारा जिसकी गंध अव्यक्त है ऐसे पानी की, जिसकी गंध तथा रस अव्यक्त है ऐसी अग्नि की, और जिसकी गंध, रस तथा वर्ण अव्यक्त है ऐसी उदर वायु की उत्पत्ति होती देखी जाती है।

विशेष - उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त द्रव्य । यह मूर्तिक जड़ पदार्थ वर्ण, गंध, रस और स्पर्श से युक्त एक द्रव्य है । इसके दो भेद होते हैं— स्कंध और अणु । इस द्रव्य का विस्तार दो परमाणु वाले द्वयणुक स्कंध से लेकर अनंतानंत परमाणु वाले महास्कंध तक होता है । इसके छः भेद हैं— सूक्ष्मसूक्ष्म, सूक्ष्म, सूक्ष्मस्थूल, स्थूल सूक्ष्म, स्थूल और स्थूल स्थूल । अदृश्य और अस्पृश्य रहने वाला अणु सूक्ष्म-सूक्ष्म है । अनंत प्रदेशों के समुदाय रूप होने से कर्म-स्कंध सूक्ष्म पुद्गल कहलाते हैं । शब्द, स्पर्श, रस और गंध सूक्ष्मस्थूल हैं, क्योंकि चक्षु इंद्रिय के द्वारा इनका ज्ञान नहीं होता इसलिए तो ये सूक्ष्म हैं और कर्ण आदि इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो जाने से ये स्थूल हैं । छाया, चाँदनी और आतप स्थूल सूक्ष्म हैं क्योंकि चक्षु इंद्रिय द्वारा दिखायी देने के कारण ये स्थूल हैं और विघात रहित होने के कारण सूक्ष्म हैं अंतः ये स्थूलसूक्ष्म हैं । पानी आदि तरल पदार्थ जो पृथक् करने पर मिल जाते हैं, स्थूल हैं । पृथिवी आदि स्कंध भेद किये जाने पर फिर नहीं मिलते इसलिये स्थूल-स्थूल हैं । शरीर, वचन, मन, श्वासोच्छ्वास और पाँच इंद्रियां

आदि सब इसी की पर्याय है ।⁹ एक अणु से शरीर की रचना नहीं होती, किंतु अणुओं के समूह से शरीर बनता है । इसकी गति और स्थिति में क्रमशः धर्म और अधर्म द्रव्य सहकारी होते हैं ।¹⁰

➤ छहढाला में अजीव शब्द का प्रयोग और उसके अर्थ –

➤ 1.

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिनमाहिं विपर्ययत्व
चेतन को है उपयोग रूप, बिनमूरत चिन्मूरत अनूप ॥२॥

➤ अन्वयार्थ : [जीवादि] जीव आदि (जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष) प्रयोजनभूत तत्त्व हैं, [सरधैं तिनमाहिं विपर्ययत्व] उनमें विपरीत श्रद्धान करना (सो अग्रहीत मिथ्यादर्शन है); [चेतन को है उपयोग रूप] आत्मा का स्वरूप उपयोग (दर्शन-ज्ञान) है, और वह [बिनमूरत चिन्मूरत अनूप] अमूर्तिक, चैतन्यमय और उपमा-रहित है ।

2. अजीव तत्त्व की विपरीत श्रद्धा

तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान । 5 ॥

अन्वयार्थ : (मिथ्यादृष्टि जीव) [तन] शरीर के [उपजत] उत्पन्न होने से [अपनी] अपना आत्मा [उपज] उत्पन्न हुआ [जान] मानता है और [तन] शरीर के [नशत] नाश होने से [आपको] आत्मा का [नाश] मरण हुआ ऐसा [मान] मानता है ।

3. व्यवहार सम्यग्दर्शन का स्वरूप –

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंध रु संवर जानो

निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यों सरधानों

है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो

तिनको सुन सामान्य विशेषैं, दिढ प्रतीत उर आनो । 6 ॥

अन्वयार्थ : [जिन] जिनेन्द्रदेव ने [जीव] जीव, [अजीव] अजीव, [आस्रव] आस्रव, [बन्ध] बन्ध, [संवर] संवर, [निर्जरा] निर्जरा, [अरु] और [मोक्ष] मोक्ष [तत्त्व] यह सात तत्त्व [कहे] कहे हैं; [तिनको] उन सबकी [ज्योंका त्यों] यथावत्-यथार्थरूप से [सरधानो] श्रद्धा करो । [सोई] इस प्रकार श्रद्धा करना सो [समकित व्यवहारी] व्यवहारसे सम्यग्दर्शन है । अब [इन रूप] इन सात तत्त्वों के रूप का [बखानो]

⁹ महापुराण 24.144-153, हरिवंशपुराण- 2.108, 58. 55, 4.3

¹⁰ वीरवर्द्धमान चरित्र 16.126-130

वर्णन करते हैं; [तिनको] उन्हें [सामान्य विशेष] संक्षेप से तथा विस्तार से [सुन] सुनकर [उर] मनमें [दिढ़] अटल [प्रतीत] श्रद्धा [आनो] करो ।

4. अजीव तत्त्व का लक्षण वा भेद —

चेतनता-बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं
पुद्गल पंच वरन-रस गंध दो, फरस वसु जाके हैं ॥
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनुरूपी
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिनमूर्ति निरूपी ॥७॥

अन्वयार्थ : जो [चेतनता-बिन] चेतनता रहित है [सो] वह [अजीव] अजीव है; [ताके] उस अजीवके [पंच भेद] पाँच भेद हैं; [जाके पंच वरन-रस] जिसके पाँच वर्ण और रस, दो गन्ध और [वसू] आठ [फरस] स्पर्श [हैं] होते हैं, वह पुद्गलद्रव्य है । जो [जिय] जीव को (और) [पुद्गल को] पुद्गल को [चलन सहाई] चलने में निमित्त [और] [अनुरूपी] अमूर्तिक है वह [धर्म] धर्म-द्रव्य है तथा [तिष्ठत] गतिपूर्वक स्थिति-परिणाम को प्राप्त (जीव और पुद्गल को) [सहाई] निमित्त [होय] होता है वह [अधर्म] अधर्म द्रव्य है । [जिन] जिनेन्द्र भगवान ने उस अधर्म-द्रव्य को [बिन-मूर्ति] अमूर्तिक, [निरूपी] अरूपी कहा है ।

5. आकाश, काल और आस्रव के लक्षण वा भेद

सकल द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछानो
नियत वर्तना निशिदिन सो, व्यवहार काल परिमानो ॥
यों अजीव, ... ॥१८॥

अन्वयार्थ : [जास में] जिसमें [सकल] समस्त [द्रव्य को] द्रव्यों का [वास] निवास है [सो] वह [आकाश] आकाश द्रव्य [पिछानो] जानना; [वर्तना] स्वयं प्रवर्तित हो और दूसरों को प्रवर्तित होने में निमित्त हो वह [नियत] निश्चय काल-द्रव्य है; तथा [निशिदिन] रात्रि, दिवस आदि [व्यवहारकाल] व्यवहारकाल [परिमानो] जानो । [यों] इस प्रकार [अजीव] अजीव-तत्त्व का वर्णन हुआ ।

➤ छहढाला में पुद्गल शब्द का प्रयोग और उसके अर्थ —

1. जीव-तत्त्व के विषय में मिथ्यात्व

पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल
ताकों न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान ॥३॥

अन्वयार्थ : पुद्गल [नभ] आकाश, धर्म, अधर्म, काल [इनतैं] इनसे [न्यारी है जीव चाल] जीव का स्वभाव भिन्न है ; (तथापि मिथ्यादृष्टि जीव) [ताकों न जान] उस (स्वभाव) को नहीं जानता और विपरीत [मान करि] मानकर [देह में निज पिछान] शरीर में आत्मा की पहिचान करता है ।

2. अजीव तत्त्व का लक्षण वा भेद

चेतनता-बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं
पुद्गल पंच वरन-रस गंध दो, फरस वसु जाके हैं ॥
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनुरूपी
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिनमूर्ति निरूपी ॥७॥

अन्वयार्थ : जो [चेतनता-बिन] चेतनता रहित है [सो] वह [अजीव] अजीव है ; [ताके] उस अजीवके [पंच भेद] पाँच भेद हैं ; [जाके पंच वरन -रस] जिसके पाँच वर्ण और रस , दो गन्ध और [वसू] आठ [फरस] स्पर्श [हैं] होते हैं, वह पुद्गलद्रव्य है । जो [जिय] जीव को (और) [पुद्गल को] पुद्गल को [चलन सहाई] चलने में निमित्त [और] [अनुरूपी] अमूर्तिक है वह [धर्म] धर्म-द्रव्य है तथा [तिष्ठत] गतिपूर्वक स्थिति -परिणाम को प्राप्त (जीव और पुद्गल को) [सहाई] निमित्त [होय] होता है वह [अधर्म] अधर्म द्रव्य है । [जिन] जिनेन्द्र भगवान ने उस अधर्म-द्रव्य को [बिन-मूर्ति] अमूर्तिक, [निरूपी] अरूपी कहा है ।

3. सम्पूर्ण कथन का सार

पुण्य-पाप-फलमाहिं, हरख बिलखौ मत भाई
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई
लाख बात की बात यही, निश्चय उर लाओ
तोरि सकल जग दंद-फंद, नित आतम ध्याओ ॥९॥

4. अन्वयार्थ : [भाई] हे आत्माथी प्राणी ! [पुण्य-फलमाहिं] पुण्य के फल में [हरख मत] हर्ष न कर और [पाप-फलमाहिं] पाप के फल में [विलखौ मत] द्वेष न कर (क्योंकि यह पुण्य और पाप) [पुद्गल परजाय] पुद्गल की पर्यायें हैं । (वे) [उपजि] उत्पन्न होकर [विनसै] नष्ट हो जाती हैं और [फिर] पुनः [थाई] उत्पन्न होती हैं । [उर] अपने अन्तर में [निश्चय] निश्चयसे - वास्तव में [लाख बातकी बात] लाखों बातों का सार [यही] इसीप्रकार [लाओ] ग्रहण करो कि [सकल] पुण्य-पापरूप समस्त [जग-दंद-फंद] जन्म-मरण के द्वन्द (राग-द्वेष) रूप विकारी - मलिन भाव [तोरि] तोड़कर [नित] सदैव [आतम ध्याओ] अपने आत्मा का ध्यान करो ।

➤ अजीव और पुद्गल एक अध्ययन